महाराजा सुरजमल की विचारधारा की विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी

हेतराम बुडिया

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

2023

अनुक्रमणिका

1.शोध परिचय

2.शोध अध्ययन की आवश्यकता

3.शिक्षा की परिभाषाएं

4.शोध समस्या

5.तकनीकी शब्दावली

6.शोध विधि

7.शोध के चर

8.शोध के उद्धेश्य

9.परिकल्पना

10.अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि

11.शोध का परिसीमन

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध एवं परिचय

महाराजा सुरजमल का आधुनिक भारत के इतिहास में नाम गर्व से लिया जाता है। उन्होने भरतपुर व उसके आस–पास के क्षेत्र में जाट राज्य की स्थापना की।

उन्होने मुगलों व राजपूतों के प्रतिशोध का सफलतापूर्वक सामना किया। मराठो से उन्होने मित्रतापूर्वक सम्बन्ध स्थापित किए। अनेक युद्धों में उन्होने मुस्लिम शासको को धूल चटाई। इस कारण उन्हे जाट जाति का अफलागुन भी कहा जाता है।

देश में परिस्थितिया विपरीत होते हुए भी उन्होने हिन्दूत्व को बचाए रखा व जाट जाति को शिरमोर किया।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

महाराजा सुरजमल की विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ हैं। इनकी विचारधारा पर शोध करने से उस समय की धार्मिक,राजनितिक,सांस्कृतिक व आर्थिक जानकारियां निकलकर सामने आयेगी। उस समय के परिवेश को वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाकर नवीन क्रियाकलापों का सर्जन किया जा सकेगा।

1.महाराजा सुरजमल की विचारधारा पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ हैं।

2. महाराजा सुरजमल की विचारधारा पर शोध करने से मुगल व जाटों के मध्य संघर्ष की गाथा सामने आयेगी।

3.इनकी विचारधारा पर शोध करने से उनकी राजनितिक दुरदर्शिता व उनकी सुझ–बुझ व उनकी प्रशासनिक दक्षता को समझने में मदद मिलेगी।

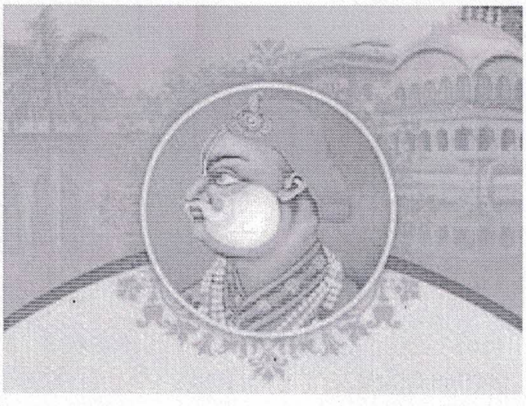

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है, और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

मैक्स वेबर के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे उसकी प्रक्रिया व प्रभावों की बुद्धिसंगत व्याख्या की जा सकें।

गिंसबर्ग के अनुसार,''समाजशास्त्र मानवीय अंतक्रियाओं और अंर्तसंबधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।

शोध समस्या

महाराजा सुरजमल की विचारधारा की विवेचना

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थ –

मानविकी वह शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकि का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्धेश्य–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्धे पूरे जोर तरीके से उठायेगा।

जाट जाति का प्लेटो – यह शब्द महाराजा सुरजमल के लिए प्रयक्त किया गया है।

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुंसधान में कई अध्ययन विधियॉ प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी नें सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रश्न पूछकर ऑकडें इकट्ठे कियें जाते है। जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गणों की विशेषता या योग्यता का करता है।

'' चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है'' करलिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है।

1. प्राथमिक चर– प्राथमिक चर वे मूल आंकडें होते है जिसमें अनुसंधानकर्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रागणक, स्वंय सकत्र शामिल होते है।

2. द्वितीय चर – द्वितीय आंकडे.प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध के उद्धेश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्य का निर्धारण करता है। उद्धेश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्धेश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. महाराजा सुरजमल की विचारधारा की विवेचना करना।
2. महाराजा सुरजमल की प्रशासनिक व्यवस्था को जानना।
3. महाराजा सुरजमल की आर्थिक नीति को जानना।
4. महाराजा सुरजमल की विदेश नीति को जानना।

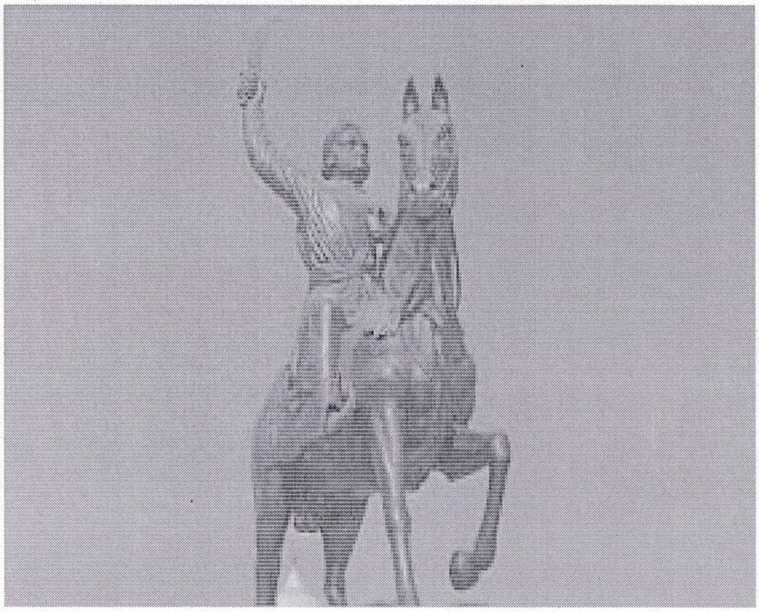

शोध की परिकल्पना

महाराजा सुरजमल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे कुशल योद्धा, विद्वान व चतुर कुटनितिज्ञ भी थें। उन्होने जाट राज्य की स्थापना की व राज्य को सुदृढ. किया।

महाराजा सुरजमल ने अपनी प्रशासनिक कुशलता से सुदुढ सेना का गठन किया। व शक्तिशाली मुगलों से मुकाबला किया।

इस शोध के माध्यम से उनकी विचारधारा सामने आयेगी। आज के युग के साथ सामंजस्य बैठाकर समाज में बदलाव लाने मे मदद मिलेगी।

अध्ययन में अपनायें जाने वाली विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने ऑकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में रामास्वामी पेरियार की विचारधारा की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेगें।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध में महाराजा सुरजमल की विचारधारा पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।
3. महाराजा सुरजमल की विचारधारा का विवेचनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाराजा सुरजमल का युग एवं प्रवृतियॉ – डॉ मोहन लाल गुप्ता सुबादा प्रकाशन
2. महाराजा सुरजमल – कुॅवर नटवर सिंह
3. जाट जाति का प्लेटो महाराजा सुरजमल – डॉ. बलवीर सिंह, चौ. सुखवीर सिंह दलाल